कुल पृष्ठ संख्या– 28 (कवर पेज सहित) क्रम संख्या 2808377

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर

उच्च माध्यमिक परीक्षा

प्रश्नवार प्राप्तांकों की सारणी (परीक्षक के उपयोग हेतु)			
प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक	प्रश्नों की क्रम संख्या	प्राप्तांक
1	12	19	5
2	5	20	5
3	6	21	
4	6	22	
5	6	23	
6	2	24	
7	2	25	
8	2	26	
9	2	27	
10	2	28	
11	2	29	
12	2	30	
13	3	31	
14	3	योग	80
15	3	प्राप्तांकों का कुल योग (Round off)	
16	3	अंकों में	शब्दों में
17	4	80	अस्सी
18	4		

79

79

परीक्षक के हस्ताक्षर

संकेतांक 26862

(परीक्षार्थी द्वारा स्वयं भरा जाना चाहिए)

नोट :– परीक्षार्थी उपरोक्त के अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका के अन्य किसी भी भाग में अपना नामांक नहीं लिखें।

माध्यम – हिन्दी ✓ अंग्रेजी ☐

विषय हिन्दी अनिवार्य

परीक्षा का दिन शुक्रवार

दिनांक 20-02-2026

नोट :– परीक्षार्थी के लिए आवश्यक निर्देश इस पृष्ठ के पिछले भाग पर उल्लेखित हैं। जिन्हें सावधानी पूर्वक पढ़ लें व पालन अवश्य करें।

परीक्षक हेतु निर्देश :– (1) परीक्षक को उपरोक्त सारणी अनुसार प्राप्तांक भरना अनिवार्य है, अन्यथा नियमानुसार दंडित किया जायेगा।

(2) परीक्षक उत्तर पुस्तिका के अन्दर के पृष्ठों के बायीं ओर निर्धारित कॉलम में लाल इंक से अंक प्रदत्त करें।

(3) कुल योग भिन्न में प्राप्त होने पर उसे पूर्णांक में ही परिवर्तित कर अंकित करें (उदाहरणार्थ: 15 ¼ को 16, 17 ½ को 18, 19 ¾ को 20)

प्रमाणित किया जाता है कि इस उत्तर पुस्तिका के निर्माण में 60 जी.एस.एम. ईको मैपलिथो कागज़ ही उपयोग में लिया गया है। 181 / 2026

परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक निर्देश

1. समस्त प्रश्नों का हल निर्धारित शब्द सीमा में इसी उत्तर पुस्तिका में करना है। विशेष परिस्थिति में अतिरिक्त उत्तर पुस्तिका, उत्तर पुस्तिका भरी हुई होने पर पर्यवेक्षक एवं वीक्षक की अनुशंसा पर ही उपलब्ध कराई जायेगी।
2. प्रश्न–पत्र पर निर्धारित स्थान पर ही अपना नामांक लिखें।
3. प्रश्न–पत्र हल करने के पश्चात् जिस पृष्ठ पर हल समाप्त होता है, उस पर अन्त में ''समाप्त'' लिखकर अन्त के सभी रिक्त पृष्ठों को तिरछी लाईन से काटें।
4. निम्न बातों का विशेष ध्यान रखें अन्यथा अनुचित साधनों की रोकथाम अधिनियम के तहत कार्यवाही की जा सकेगी:–

    (i) उत्तर पुस्तिका के ऊपर/अन्दर तथा प्रश्नोत्तर के किसी भी भाग में चाही गई सूचना के अलावा अपना नामांक, नाम, पता, फोन नम्बर अथवा पहचान की कोई अन्य प्रकार की सूचना आदि अंकित नहीं करें अन्यथा ''अनुचित साधनों के प्रयोग'' के अन्तर्गत कार्यवाही की जावेगी।

    (ii) उत्तर पुस्तिका के पृष्ठों को फाड़ें नहीं। उत्तर पुस्तिका के मुख पृष्ठ पर अंकित संख्या के अनुसार पृष्ठ पूरे होने चाहिए। परीक्षार्थी उत्तर पुस्तिका प्राप्त करते ही पृष्ठ संख्या जांच कर लें यदि पृष्ठ कम/अधिक या क्रम में नहीं हैं तो वीक्षक से तुरन्त बदलवा लें।

    (iii) परीक्षा केन्द्रों पर पुस्तक, लेख, कागज, केल्क्यूलेटर, मोबाईल, पेजर आदि किसी भी प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक उपकरण तथा किसी भी प्रकार का हथियार आदि ले जाना निषेध है।

    (iv) वस्त्र, स्केल, ज्योमेट्री बॉक्स पर कुछ न लिख कर लावें। टेबल के आस–पास कोई अनुचित सामग्री नहीं होनी चाहिए, इसकी जांच कर लें।

    (v) अपनी उत्तर पुस्तिका/ग्राफ/मानचित्र आदि परीक्षा भवन से बाहर ले जाना दण्डनीय अपराध है, अतः परीक्षा समाप्ति पर उत्तर पुस्तिका वीक्षक को बिना सौंपे परीक्षा कक्ष नहीं छोड़ें।

5. उत्तरों को क्रमानुसार एक ही स्थान पर लिखें। प्रश्न क्रमांक भी सही अंकित करें, अन्यथा दण्ड स्वरूप परीक्षक को 1 अंक कम करने का अधिकार है। बीच में उत्तर पुस्तिका के पृष्ठ रिक्त न छोड़ें। गणित विषय के लिए रफ कार्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठों पर करें तथा तिरछी रेखा से काटें।
6. जहाँ तक हो सके प्रश्न के सभी भाग के उत्तर, उत्तर पुस्तिका में एक ही स्थान पर अंकित करें।
7. भाषा विषयों को छोड़कर शेष सभी विषयों के प्रश्न–पत्र हिन्दी–अंग्रेजी दोनों भाषा में मुद्रित हैं। किसी भी प्रकार की त्रुटि/अन्तर/विरोधभास होने पर हिन्दी भाषा के प्रश्न को ही सही माना जाये।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड-अ

1.

प्रश्न संख्या	(i)	(ii)	(iii)	(iv)	(v)	(vi)	(vii)	(viii)	(ix)
उत्तर विकल्प	(ब)	(ब)	(अ)	(ब)	(स)	(द)	(स)	(द)	(स)

(x)	(xi)	(xii)
(अ)	(ब)	अ

12

2. (i) तीन

(ii) ~~अंकना~~ अभिधा

(iii) भ्रांतिमान अलंकार

(iv) श्लेष अलंकार

(v) Permissible

(vi) न्यास

5

3. (i) विघ्नों से (स)

(ii) मनन करना (स)

(iii) अचल (ब)

कृ.प.उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(iv) पद्यांश का उचित शीर्षक 'हे मातृभूमि ! हमको वर दो' है।

(v) 'क्यों बने फकीर लकीरों के' पंक्ति में कवि कहना चाहता है कि हे मातृभूमि ! हमें ऐसा वरदान दो कि हम हाथों की लकीरों जैसे अंधविश्वासों के चक्कर में न पड़कर नित नये सपनों में सफलता प्राप्त करें।

(vi) पद्यांश में कवि हमें बुरा नहीं बोलने, बुरा नहीं देखने, कुछ भी बुरा न सुनने, संघर्ष करने से रुके नहीं, अधर्म के आगे झुके नहीं, विघ्नों से कभी घबराये नहीं आदि काम नहीं करने की सीख दे रहा है।

4. (i) मृत्यु की (ब)

(ii) दीर्घ संधि (अ)

(iii) जो स्वयं से मित्रता करता है (स)

(iv) गद्यांश का उपयुक्त शीर्षक 'कर्म का महत्व' है।

(v) मनुष्य को स्वधर्मानुसार कर्म चयन की स्वतंत्रता होनी चाहिए।

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

(vi) जो कर्म मनुष्य की योग्यता और स्वभाव के अनुकूल होगा, वही उसके लिए शुभ सिद्ध होता है इसलिए इसी कर्म को निस्वार्थ पवित्र भाव से करना स्वयं के साथ मित्रता निभाने की कसौटी है।

1
1
6

5. (i) बच्चों को छतों के खतरनाक किनारों से गिरने से उनके ही शरीर का रोमांचित वेग, घूमती हुई पृथ्वी व पतंग की लचीली डोर बचाती है।

1

(ii) 'कैमरे में बंद अपाहिज' कविता मे साक्षात्कार कर्ता कार्यक्रम को रोचक बनाने के लिए अपाहिज से अर्थहीन प्रश्न पुछकर उसे रुलाना चाहता है।

1

(iii) बाजार का जादू आँख की राह से काम करता है।

1

(iv) 'पहलवान की ढोलक' पाठ मे नए राजकुमार के राज्य प्रबंधन अपने हाथ मे आते ही दंगल का स्थान ~~घुड़सवारी~~ क्रिकेट खेल ने ले लिया।

1

(v) लड़कों के मन में गणित पढ़ाने वाले मंत्री मास्टर की दहशत बैठी हुई थी।

1

(vi) यशोधर बाबू की पत्नी के चचेरे भाई का नाम गिरीश था।

1
6

कृ.प.उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

खण्ड - (ब)

6\. जनसंचार के मुद्रित माध्यम का संक्षिप्त विवरण - इस माध्यम में स्थिरता होती है। लेकिन यह अनपढ़ के लिए अनुपयोगी होता है। इसे हम एक स्थान से दूसरे स्थान पर कही भी साक्ष्य के रूप में ले जा सकते हैं। इस माध्यम में समाचार छपने में अधिक समय लगता है। यह जनसंचार का सबसे पुराना माध्यम है। इसकी भाषा शैली समझने मे कोई परेशानी होने पर हम शब्दकोश का प्रयोग कर सकते है। इस माध्यम मे शब्दों की स्थिरता होती है। जिसके कारण हम आसानी से समाचार समझ सकते हैं।

7\. बीट रिपोर्टिंग :- जब किसी समाचार पत्र का सम्पादक कार्य कुशलता व रुचि के अनुसार समाचार सम्पादन का विभाजन करता है तो उसे बीट कहते हैं। बीट रिपोर्टिंग के सम्पादक को ज्यादा जानकारियों की आवश्यकता नही होती उसे केवल विषय के बारे मे अच्छी जानकारी व विषय मे रुचि होनी आवश्यक है। बीट रिपोर्टिंग के ~~सम्पादक~~ रिपोर्टर को सम्पादक कहते है।

8\. रेडियो नाटक- रेडियो नाटक का सबसे महत्वपूर्ण तत्व समय बद्धता होती है। रेडियो नाटक की समय सीमा 15 से 30 मिनट होनी चाहिए। जिसमें केवल 5 से 6 पात्र होने चाहिए। रेडियो नाटक प्रस्तुती मे

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
2		समय, शब्द, पात्र, दृश्य, परिवेश आदि तत्वो का विशेष ध्यान देना चाहिए। रेडियो नाटक मे संवाद की विशेष भूमिका होती है संवाद से ही नाटक का क्रमिक विकास होता है संवाद के माध्यम से ही श्रोता पात्रो के हाव-भाव समझता है। रेडियो नाटक मे संगीत भी बहुत आवश्यक होता है ताकि श्रोता परिवेश को समझ सके।
2	9.	लुट्टन पहलवान ने अपनी मृत्यु के संबंध मे अपने शिष्यों से कहा कि मैं अपने जीवन मे कभी-भी दंगल मे चित्त नही हुआ इसलिए मुझे मेरी मृत्यु होने के बाद चिता पर पट अर्थात् पेट के बल ही सुलाना। लुट्टन पहलवान के शिष्यो ने उसकी आज्ञा का पालन किया और उसे पेट के बल ही सुलाया।
2	10.	'देख आईने मे चाँद उतर आया है' पंक्ति का प्रतीकार्थ है कि जब एक माँ का बच्चा चाँद लेने की जिद करने लगता है तब माँ उसके सामने दर्पण लाकर कहती है, देखो आइने मे ही चाँद आ गया अर्थात माँ के बेटे का चेहरा ही चाँद के समान है। वह अपने बेटे को चाँद का टुकड़ा मानती है।
	11.	जूझ कहानी मे ईख की अच्छी कीमत मिलने के पीछे दो धारणा थी, एक तो लेखक के पिता की व दूसरी गाँव के लोगो की लेखक के पिता के अनुसार पहले कोल्हू चलाने से गुड़ ज्यादा बनता था जिससे ज्यादा कीमत मिले व गाँव के लोगो के अनुसार ईख को अच्छी तरह पक जाने

कृ. प. उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

के बाद काटने से कगुड अधिक अच्छा बनता और उसकी अच्छी कीमत भी मिलती थी।

2

12. यशोधर बाबू को उनके बेटे ने ऊनी ड्रेसिंग गाउन गिफ्ट मे दिया क्योंकि उनके बेटे अब आधुनिक युवा हो चले थे इसलिए उन्हे अपने पिता का फटा हुआ पुलोवर पहन कर दूध लाने जाना अच्छा नहीं लगता था।

2

खण्ड -'स'

13. हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का साहित्यिक परिचय - इनका जन्म 1907 ई मे आरत दुबे का छपरा जिला बलिया उत्तरप्रदेश मे हुआ। ये साहित्य को मानव की दृष्टि से देखने के पक्षपाती थे। इनका साहित्य भारत वर्ष के लिए रचनात्मक परिणति है। ये साहित्य को बोध और पांडित्य मे डालकर ऐसा रचना संसार उपलब्ध करवाते है जो तेजस्विता, लालित्य, और शास्त्रीयता का संगम हो। इनकी सांस्कृतिक दृष्टि जबरदस्त है। इनके साहित्य की मूल चेतना विराट मानवतावाद है। ये स्त्री को सामाजिक अन्याय का सबसे बड़ा शिकार मानते है। ये मानवतावादी कथाकार और समीक्षक दोनो रूपों मे प्रतिष्ठित है। इन्हे 'आलोक पर्व' रचना के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला।

इनकी प्रमुख रचनाएँ निम्न है -

BSER-18/2026

[redacted]

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

निबंध संग्रह- अशोक के फुल, कल्पलता, विचार-वितर्क
उपन्यास - अनाम दास का पोथा, बाणभट्ट की आत्मकथा
आलोचनात्मक साहित्य - सूर साहित्य, कबीर साहित्य, हिन्दी साहित्य का आदिकाल, हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास आदि प्रमुख है।

3

14. 'छोटा मेरा खेत' कविता काव्य रचना और कृषि कर्म की प्रभावी तुलना करती है। 'छोटा मेरा खेत' कविता मे कवि उमाशंकर जोशी अपने कागज के पन्ने को खेत के समान चौकोर बताते हैं। और कहते हैं कि जिस प्रकार एक किसान अपने खेत मे बीज बोता है। और खाद देता है। जिससे फसल बड़ी होती है। पकने के बाद किसान फसल की कटाई करता है। ठीक उसी प्रकार कवि भी अपने कागज रूपी खेत मे विचारो या भावो की आँधी आने पर शब्द रूपी बीज बोता है। और कवि के कल्पना रूपी रसायनो को पीकर कविता तैयार होती है, शब्द के अंकुर फुटते हैं। फसल बड़ी होती है। क्षण भर की बुआई के पश्चात कवि की रचना असीम होती है। अनन्त काल तक काटे जाने के पश्चात भी इसका प्रभाव थोड़ा भी कम नहीं होता है। परन्तु किसान की फसल को काटकर उपयोग करने के बाद व थोड़े ही दिनों मे समाप्त हो जाती है। इस प्रकार कवि ने कृषि कर्म व कवि कर्म मे सांगरूपकता स्थापित की है।

3

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

15. 'वैज्ञानिक तर्क पर लोकमान्यताएँ हावी रहती हैं।' 'काले मेघा पानी दे' पाठ के आधार पर यह कथन सत्य सिद्ध होता प्रतीत हुआ। 'काले मेघा पानी दे' पाठ मे लेखक आर्यसमाजी होने के कारण 'इन्द्र सेना' जैसे अन्धविश्वासो पर विश्वास नही करते थे। उनका मानना था कि इतनी गर्मी मे इन्द्र सेना पर पानी फेकना पानी की बर्बादी है। अगर इन्द्र सेना हमारे लिए इन्द्र महाराज से पानी माँग सकती तो सर्वप्रथम वह स्वयं के लिए पानी क्यो नही माँग लेती? क्यो घर-घर जाकर पानी माँगते हैं? जबकि गाँव के लोगो की व लेखक की जीजी की मान्यता थी कि यह पानी की बर्बादी नही है यह तो हम पानी का अर्घ्य चढ़ा रहे है। जिस प्रकार किसान ढेर सारा अनाज प्राप्त करने के लिए मुठ्ठी भर अनाज खेत मे फेंकता है उसी प्रकार पानी प्राप्त करने के लिए हमें भी कुछ पानी पहले देना होगा तभी हमे इन्द्र महाराज पानी देंगे। इस कथन पर स्वयं लेखक भी कोई तर्क नही दे पाये। इस प्रकार सिद्ध होता है कि वैज्ञानिक तर्क पर लोक मान्यताएँ हावी रहती हैं।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

16. "सिल्वर वेडिंग पाठ पीढ़ी-अंतराल की समस्याओं का ज्वलंत चित्र प्रस्तुत करता है।" सिल्वर वेडिंग पाठ मे एक तरफ यशोधर बाबू पुरानी परम्पराओं का पालन करने वाले थे, तो दूसरी ही तरफ उनके बेटे, पत्नी आधुनिक परम्पराओं के अनुसार जीवन जीने वाले थे। यशोधर बाबू और उनके परिवार के सदस्यों का छोटी-छोटी बात पर झगड़ा होता रहता था। यह पीढ़ी अन्तराल के कारण होता था। एक तरफ यशोधर बाबू मंदिर जाते, पूजा-अर्चना करते तो वही दूसरी तरफ उनके बच्चे इन्हे नापंसद करते थे। यशोधर बाबू किशनदा की सभी परम्पराओं जैसे - होली गवाना, जन्यो-पुन्यो पर कुमाउनियो के वस्त्र बदलवाना, राम लीला की तालिम की लिए घर का एक कमरा दे देना आदि का पालन करते थे। लेकिन उनका बेटा आधुनिकता से भी चीजो को घर मे लाता, घर मे पर्दे लगवाता आदि आधुनीकीकरण के कार्य करता था। उनकी पत्नी कटी बाँह का ब्लाउज पहन लेती, ऊँची एड़ी की सेंडल, रसोई के बाहर बैठकर दाल भात खा लेती थी। उनकी बेटी जीन्स और टॉप पहनती। ये सभी चीजो जो पीढ़ी अन्तराल के कारण आयी यशोधर बाबू को तो समहाउ इम्प्रॉपर मालूम होती थी। उन्हे यह सब चीजे अच्छी नही लगती थी। परन्तु कभी भी उनकी घर मे सलाह नही ली जाती थी। जिसके कारण वे हमेशा मौन रहते थे।

3

कृ.पृ.उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

17. जब वह _ _ _ _ _ _ _ _ दुर्लघ्य हो उठी।

संदर्भ - प्रस्तुत गद्यांश लेखिका महादेवी वर्मा द्वारा रचित 'भक्तिन' शीर्षक स्मृती की रेखाएँ से उद्धृत है।

प्रसंग - प्रस्तुत गद्यांश मे लेखिका ने भक्तिन के स्वभाव के कारण होने वाली समस्याओं का वर्णन किया है।

व्याख्या - प्रस्तुत गद्यांश मे लेखिका महादेवी वर्मा कहती है कि जब भक्तिन स्नान कर खाना बनाने के लिए चौके पर कोयले की मोटी रेखा खिंच कर प्रतिष्ठित हुई तो मैंने समझ लिया कि इस प्रकार के सेवक के साथ रहना टेढ़ी खीर है। लेखिका ~~हमने~~ भोजन के संदर्भ मे हमेशा सजग रहने के बावजूद अपने परिवार मे पाक विद्या मे प्रवीण थी, वे कहती हैं कि कोई भी पाक कुशल व्यक्ति दुसरे व्यक्ति की काम मे कमी निकाले बिना नही रह सकता है। लेकिन जब भक्तिन जैसे अछूत अर्थात छूत - पाक करने वाले और उस पर जान देने व्यक्ति इसके लिए बात - बात पर भूखा मरते हैं तो यह स्मरण कर भक्तिन की शंका से भरी दृष्टि मे निषेध का अनुभव किया और लेखिका के लिए वह कोयले की रेखा लक्ष्मण की रेखा से खींची रेखा के समान दुर्लंघ्य रही।

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विशेष – (i) भाषा सहज, सरल और सुबोध है।
(ii) तत्सम - तद्भव शब्दों का प्रयोग हुआ है।
(iii) विश्लेषणात्मक शैली का प्रयोग हुआ है।
(iv) भक्तिन के स्वभाव की विशेषताओं का लेखिका पर पड़े प्रभाव का वर्णन है।

4

18. अंगना अंग .... जीवन के पारावार।

संदर्भ – प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक में कवि सूर्य कान्त त्रिपाठी निराला द्वारा रचित कविता 'बादल राग' अनामिका के छठे खंड से उद्धृत है।

प्रसंग – प्रस्तुत पद्यांश में कवि ने क्रान्ति रूपी बादल का पूंजीपतियों पर प्रभाव व दलित - शोषित वर्ग की दशा का वर्णन किया है।

व्याख्या – कवि कहते हैं कि बादल की वज्र गर्जन से पुजीपती लोग काँप रहे हैं और शर्म से अपना मुँह ढक रहे हैं। अपने घर की स्त्रियों के अंगो से लिपटने के बावजूद भी वे डर के मारे काँप रहे हैं। हे विप्लव के बादल! तुझे ये किसान, शोषित, पिड़ीत वर्ग अधीर होकर पुकार रहे हैं। इनकी भुजाएँ और शरीर नष्ट झरझर अवस्था मे आ गया है। इन वैभवशाली लोगों ने इनका शोषण करके सब - कुछ इनसे छीन लिया है। अब इनके शरीर पर केवल माँस न होकर हाड़ ही शेष बचे हैं अतः हे नवजीवन देने वाले क्रांती से इनकी रक्षा करो। इन्हे नया जीवन प्रदान करो।

कृ.प.उ.

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

विशेष – (i) भाषा साहित्यिक खड़ी बोली का प्रयोग हुआ है
(ii) मुक्त छंद का प्रयोग हुआ है।
(iii) प्रसाद काव्य गुण का प्रयोग हुआ है।
(iv) पांचाली रीति का प्रयोग हुआ है।
(v) कवि ने किसानो की दुर्दशा का वर्णन किया है।

19.

जिला खेल अधिकारी, जिला पाली
राजस्थान

नि. क्र. – 2029 दिनांक – 20 फरवरी 2026

निविदा सूचना

उपर्युक्त विषयान्तर्गत जिला पाली राजस्थान द्वारा मोहर बंद निविदाएँ प्रतिष्ठित फर्मों द्वारा आमंत्रित की जाती है। निविदा प्रपत्र स्थानीय कार्यलय से निर्धारित समय मे प्राप्त किये जा सकते है। निविदाएँ दिनांक 25 फरवरी 2026 को दोपहर 2:00 बजे सभी निविदा-दाताओ के समक्ष खोली जायेगी। निविदा विवरण निम्न है –

क्र.स.	विवरण	अनुमानित राशि	धरोहर राशि	समय
1.	सम्पूर्ण खेल सामग्री	1,00000	10,000	3 माह

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

शर्तें - (i) किसी भी कारणवश अधोहस्ताक्षरित व्यक्ति को यह अधिकार है कि वह निविदा की दिनांक मे परिवर्तन कर सकता है।

(ii) सामग्री की गुणवता मे कमी पायी जाने पर उपर्युक्त कार्यवाही की जायेगी।

(iii) न्यायिक क्षेत्र पाली होगा।

5

हस्ताक्षर

(जिला खेल अधिकारी)

20. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और हमारा समाज

संकेत बिन्दु - (i) भूमिका
(ii) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का समाज मे प्रसार
(iii) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का समाज पर प्रभाव
(iv) इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का समाज मे लाभ
(V) निष्कर्ष

(i) भूमिका - भारत ने विज्ञान के क्षेत्र मे काफी उन्नती की है। आज हमारे देश में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जैसे संसाधन उपलब्ध हैं। जिससे समाज के अनेक काम आसान हो गये है, हमारे जीवन मे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया ने काफी आराम प्रदान किया है भारत मे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का निरन्तर विस्तार जारी है तथा यह हमारे लिए उपयोगी व विनाशकारी दोनों बना हुआ है।

कृ.प.उ.

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का समाज मे प्रसार - इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हमारे समाज मे आँख की तरह फैल रहा है। निरन्तर इसका विस्तार हो रहा है। समाज मे हर वर्ग का बच्चा, बूढ़े, युवा सभी इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बारे मे सूक्ष्म से सूक्ष्म जानकारी जानते है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से हम कोई भी जानकारी आसानी से घर बैठे प्राप्त कर सकते है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से हमे घर बैठे देश - विदेश के समाचार, देश मे घटित होने वाली घटना की जानकारीयाँ आसानी से प्राप्त हो रही है। इसने दो व्यक्तियो के मध्य दूरी को कम कर दिया है। जहाँ हमे मुद्रित माध्यम से सूचनाओं को जानने मे काफी समय लगता था। वही हम पल - पल की खबरो को जान सकते है। इसके कारण ही मीडिया आज देश भर मे तेजी से फैल रहा है और इसने समाचार पत्र, रेडियो आदि का स्थान ले लिया है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का समाज पर प्रभाव - इलेक्ट्रॉनिक मीडिया हमारे समाज को दोनो तरफ से प्रभावित कर रहा है। यह समाज पर सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव दोनो डालता है। यदि समाज के लोग इसका सही प्रयोग करे तो यह हमारे लिए वरदान बन सकता है अन्यथा यह हमारे लिए श्राप से कम नही है। इसके अत्यधिक प्रयोग से आँखो पर बुरा प्रभाव पड़ रहा है तथा तनाव,

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

मानसिक केंसर जैसी बिमारियाँ फैल रही है। एक तरफ देखा जाये तो इलेक्ट्रॉनिक मीडिया चैटिंग, अश्लीलता जैसी गंदगी फैलाने का काम भी कर रहा है। आज के युवा वर्ग को इसकी लत लग गई है। वह इसके बिना स्वयं को अधुरा समझते है। जिसके कारन बच्चो का पढ़ाई से ध्यान भंग हो गया है। वे अनुशासन हीन बन गये है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का समाज मे लाभ - इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के समाज मे अनेक लाभ है। जैसे इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के माध्यम से हमे सूचनाए जल्द ही प्राप्त हो जाती है। एक आदमी विश्व के किसी भी कोने मे बैठकर अपने परिवार से बात कर सकता है। उसे किसी भी तरह का इंतजार नही करना पड़ता। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया से समाज मे पैसे का आदान - प्रदान भी सरल हो गया है। विद्यार्थी जीवन मे भी इसने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विद्यार्थी अपने सभी कठिन प्रश्नो का उत्तर इस पर सोल्व कर सकते है। वे अपने बाहरी ज्ञान का विस्तार कर सकते है। वे इस पर मनोरंजन के लिए गाने सुन सकते है। वे नयी - नयी कलाओ का विकास इसके माध्यम से कर सकते है।

निष्कर्ष - हमे लोगो को इसके दुरुपयोगो के बारे मे सतर्क करना चाहिए। लोगो मे जागरुकता फैलानी चाहिए ऐसे सभा भवनो का आयोजन करना चाहिए

P.T.O.

BSER-181/2026

रीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		जिसमें हम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के उपयोग व दुरूपयोग के बारे मे लोगो को जागरूक करना चाहिए। समाज की स्त्रियो को भी इसके प्रति जागरूक बनाना चाहिए। ताकि समाज स्वच्छ व शांत हो। यदि ऐसा नही हुआ तो यह विकासशील देश की उन्नति मे बाधा बन सकता है।
5		
		* समाप्त *
80		

BSER-18T/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

क्षक द्वारा दत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर

BSER-181/2026

परीक्षक द्वारा प्रदत्त अंक	प्रश्न संख्या	परीक्षार्थी उत्तर
		२ लेख

BSER-181/2026